

This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No.

7579

B.A. Prog./I

E-II

POLITICAL SCIENCE—Paper I

(Political Theory and Thought)

(Admissions of 2005 and onwards)

Time : 3 Hours

Maximum Marks : 100

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

Note :— Answers may be written *either* in English *or* in Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.

टिप्पणी : इस प्रश्न-पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी किसी एक भाषा में दीजिए; लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

Attempt any *Five* questions.

All questions carry equal marks.

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

P.T.O.

1. Politics is pursuit of power. Critically examine.

राजनीति सत्ता के लिए संघर्ष है । आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए ।

2. What is liberty ? Distinguish between negative and positive liberty.

स्वतंत्रता क्या है ? नकारात्मक एवं सकारात्मक स्वतंत्रता की तुलना कीजिए ।

3. Discuss the elitist and pluralist theory of democracy.

लोकतंत्र के विशिष्टवर्गीय एवं बहुलवादी सिद्धांत की विवेचना कीजिए ।

4. Examine Locke's defence of property.

संपत्ति के पक्ष में लॉक के विचारों की समीक्षा कीजिए ।

5. What is Marx's critique of State ? Discuss.

राज्य पर मार्क्स की आलोचना क्या है ? विवेचना कीजिए ।

6. Examine Rousseau's views on Inequality.

असमानता पर रूसो के विचारों की समीक्षा कीजिए ।

7. Evaluate Kautilya's theory of state.

कौटिल्य के राज्य सिद्धांत की विवेचना कीजिए ।

8. Discuss Gandhi's idea of Swaraj as a critique of western modernity.

पाश्चात्य आधुनिकता के आलोचना के रूप में गांधी के स्वराज पर विचारों की विवेचना कीजिए ।

9. Analyse Ambedkar's theory of Social Justice'.

अम्बेडकर के सामाजिक न्याय सिद्धांत की समीक्षा कीजिए ।

10. Write short notes on any two of the following :

(a) Relevance of political theory

(b) Class struggle

(c) Periyar's views on identity

(d) Distributive Justice.

निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

- (a) राजनीतिक सिद्धांत की प्रासंगिकता
- (b) वर्ग संघर्ष
- (c) अस्मिता पर पेरियार के विचार
- (d) वितरणात्मक न्याय ।